ماہنامہ
شعاع عمل
لکھنؤ

جون ۲۰۱۰ء

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَکِتَابٌ مُبِینٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

June 2010

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-6

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक-12

जून - 2010

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
प्रोफ़ेसर सै० इमरान हैदर, मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक - 200 रु   मिलने का पता   क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- तज़हीब नगरौरी
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(जून 2010ई० जमादिस्सानी-रजबुल मुरज्जब 1431हि०)

न० मज़मून व लेखक	पेज
1— मेराजे इन्सानियत इमाम मुहम्मद तक़ीअ० व नक़ीअ० सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह	3
2— इस्लाम में पर्दे का तसव्वुर क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब क़िब्ला	5
3— इमाम मुहम्मदे बाक़िर अलैहिस्सलाम........ प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला	10
4- मुख्य समाचार इदारा	15

इमाम अली नक़ीअ० ने फ़रमायाः-

- जो शख़्स सिर्फ़ अपनी अक़्ल पर भरोसा करे और मश्वरा न करे उस से लग़ज़िश हो सकती है।
- दुनिया एक ऐसा बाज़ार है जहाँ एक जमाअत उस से फ़ायदा उठाती है, दूसरी जमाअत घाटा उठाती है।
- बेहूदगी बेअक़्लों की फ़ितरत और नादानों की सिफ़त हुआ करती है।
- जो शख़्स ख़ुदपसन्द होता है ज़्यादातर लोग उस से नाराज़ रहते हैं।
- ख़ुदा की नेमतों पर ग़ौर करना एक अच्छी इबादत है।

मेराजे इन्सानियत इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] व इमाम अली नक़ी[अ०] की सीरत की रौशनी में

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०]

नामः मुहम्मद, लक़बः तक़ी और जवाद, कुन्नियतः अबुजाफ़र, विलादतः 10 रजब 195[हि०], वफ़ातः 29 ज़ीक़ादा 220[हि०] मक़ामः बग़दाद, मज़ार मुबारकः काज़मैन (इराक़)

आप पाँचवें बरस में थे जब आपके वालिदे बुज़ुर्गवार इमाम रिज़ा[अ०] सलतनते अब्बासिया के वली अहद हो गए इसके माने ये हैं कि सिने तमीज़ पर पहुँचने के बाद ही आपने आँख खोलकर वह माहौल देखा जिसमें अगर चाहते तो ऐशो आराम में कोई कमी न रहती माल व दौलत क़दमों से लगा हुआ था और तुज्को एहतेशाम आँखों के सामने था फिर बाप की जुदाई भी थी क्योंकि इमाम रिज़ा[अ०] ख़ुरासान में थे और मुताल्लिक़ीन तमाम मदीना मुनव्वरा में थे। और फिर आप का आठवां ही बरस था कि इमाम रिज़ा[अ०] ने दुनिया ही से मुफ़ारेक़त फ़रमाई।

ये वह मंज़िल है कि जहाँ हमारे तारीख़ी कारख़ाना-ए-तख़ैय्युल और तौजीह की तमाम दूरबीनें बेकार हो जाती हैं। किसी दुनियवी मकतब और दर्सगाह में तो न उनके आबाओ अजदाद कभी गए न ये जाते नज़र आते हैं। हाँ एक मासूम के लिए मासूम बुज़ुर्गों की तालीम व तरबियत नाक़ाबिले इनकार है मगर यहाँ मासूम बाप से चार पाँच बरस की उम्र में जुदाई हो गई। एक तवारुसे सिफ़ात रह जाता है मगर हर एक जानता है कि इससे सलाहियत का हुसूल होता है, फेलियत के लिए फिर अस्बाबे ज़ाहिरी की ज़रूरत है। मगर ये तारीख़ी वाक़िआ है कि इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] ने बचपन की जितनी मंज़िलें इसके बाद तै कीं वह भी शबाब की सरहद तक भी न थीं कि आपकी सीरते बलन्द की मिसालें और इल्मी कमाल की तजल्लियाँ दुनिया की आँखों के सामने आ गईं। यहाँ तक कि इमाम रिज़ा[अ०] की वफ़ात के बाद ही शाही दरबार में अकाबिर उलमाए वक़्त से मुबाहेसा हुआ तो सबको आपकी अज़्मत के सामने सरे तस्लीम ख़म करना पड़ा।

अब ये वाक़िआ कोई सिर्फ़ एतेक़ादी चीज़ भी नहीं है बल्कि मुसल्लमुस्सुबूत तौर पर तारीख़ का एक जुज़ है यहाँ तक कि इस मनाज़रे के बाद इसी महफिल में मामून ने अपनी लड़की उम्मुल फ़ज़्ल को आपके अक़्द में दिया।

ये सियासते ममलकत का एक नई क़िस्म का सुनहरा जाल था जिसमें इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] की कमसिनी को देखते हुए ख़लीफ़-ए-वक़्त को कामयाबी की पूरी तवक़्क़ो हो सकती थी।

जैसा कि मैंने अपने रिसाला ''नवें इमाम'' (प्रकाशकः इमामिया मिशन) में लिखा है।

''बनी उमय्या के बादशाहों को आले रसूल[स०] की ज़ात से इतना इख़्तेलाफ़ न था जितना उनके सिफ़ात से। वह हमेशा इसके दरपे रहते थे कि बलन्दि-ए-अख़लाक़ और मेराजे इन्सानियत का वह मरकज़ जो मदीने में क़ायम है और जो सलतनत के माद्दी इक़्तेदार के मुक़ाबले में एक मिसाली रूहानियत का मरकज़ बना हुआ है ये किसी तरह टूट जाए इसके लिए वह घबरा-घबरा कर मुख़्तलिफ तदबीरें करते थे। इमाम हुसैन[अ०] से बैअत करना इसी की एक शक्ल थी। और फिर इमामे रिज़ा[अ०] को वली-ए-अहद बनाना इसी का दूसरा तरीक़ा।

फ़क़त ज़ाहिरी शक्ल में एक एक अन्दाज़ मुआनेदाना और दूसरे का तरीक़ा इरादतमन्दी के रूप में था मगर असल हक़ीक़त दोनों बातों की एक थी। जिस तरह इमाम हुसैन[अ०] ने बैअत न की तो वह शहीद कर डाले गए उसी तरह इमाम रिज़ा[अ०] वली अहद होने के बावजूद हुकूमत के माद्दी मक़ासिद के साथ न चल सके तो आपकी शमा-ए-हयात को ज़हर के ज़रिये से हमेशा के लिए ख़ामोश कर दिया गया।

अब मामून के नुक़्त-ए-नज़र से ये मौक़ा इन्तिहाई क़ीमती था कि इमाम रिज़ा[अ०] का जानशीन आठ नौ बरस का एक बच्चा है जो तीन चार बरस पहले ही बाप से छुड़ा लिया जा चुका था हुकूमते वक़्त की सियासी सूझबूझ कह रही थी कि इस बच्चे को अपने तरीक़े पर लाना निहायत आसान है और इसके बाद वह मरकज़ जो हुकूमते वक़्त के ख़िलाफ़ साकिन और ख़ामोश मगर इन्तेहाई ख़तरनाक, क़ायम है हमेशा के लिए ख़त्म हो जायेगा।

मामून इमाम रिज़ा[अ०] की वली अहदी की मुहिम में अपनी नाकामी को मायूसी का सबब तसव्वुर नहीं करता था इसलिए कि इमाम रिज़ा[अ०] की ज़िन्दगी एक उसूल पर क़ायम रह चुकी थी इसमें तबदीली नहीं हुई तो ये ज़रूरी नहीं है कि इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] आठ बरस के सिन में ख़ानदाने शाही का जुज़ बना लिये जाएं तो वह भी बिल्कुल अपने बुज़ुर्गों के उसूले ज़िन्दगी पर बरक़रार रहें।

सिवा उन लोगों के जो उन मख़सूस अफ़राद के ख़ुदादाद कमालात को जानते थे उस वक़्त का हर शख़्स यक़ीनन मामून का हम ख़याल होगा। मगर हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] ने अपने किरदार से साबित कर दिया कि जो हस्तियाँ आम जज़्बात की सतह से बालातर हैं और ये भी उसी क़ुदरती सांचे में ढले हुए हैं जिनके अफ़राद हमेशा मेराजे इन्सानियत की निशानदही करते आए हैं आपने शादी के बाद महले शाही में क़याम से इनकार फ़रमाया और बग़दाद में जब तक क़याम रहा आप एक अलाहेदा मकान किराये पर लेकर उसमें क़यामपज़ीर हुए और फिर एक साल के बाद ही मामून से हिजाज़ वापस जाने की इजाज़त ले ली। और उम्मुल फ़ज़्ल के साथ मदीना तशरीफ ले गए और इसके बाद हज़रत का काशाना घर की मलका के दुनियवी शहज़ादी होने बावजूद बैतुश्शरफ़े इमामत ही रहा। क़स्रे दुनिया न बन सका। डयोढ़ी का वही अन्दाज़ रहा जो इसके पहले था। न पहरेदार और न कोई ख़ास रोक-टोक। न तुज़्को एहतेशाम, न औक़ाते मुलाक़ात की हदबन्दी, न मुलाक़ातियों के साथ बर्ताव में कोई फ़र्क़। ज़्यादातर नश्स्ति मस्जिदे नबवी में रहती थी जहाँ मुसलमान हज़रत के वाज़ो नसीहत से फ़ायदा उठाते थे। राावियाने हदीस अहादीस दरयाफ़्त करते थे। तुल्लाबे इल्म मसाएल पूछते थे और इल्मी मुश्किलात को हल करते थे। चुनानचे शाही सियासत की शिकस्त का नतीजा ये था कि आख़िर आपका भी ज़हर से उसी तरह ख़ातमा किया गया जिस तरह आपके बुज़ुर्गों का इससे पहले किया जाता रहा था।

इमाम अली नक़ी[अ०]

नामः अली, लक़बः नक़ी, कुन्नियतः अबुलहसन, विलादतः 5 रजब 214[हि०], वफ़ातः 3 रजब 254[हि०], बमक़ामः सामरा और मज़ारः शहर सामरा (इराक़)

आपकी ज़िन्दगी में भी वही ख़ुसूसियतें मौजूद हैं जो आपके आबाओ अजदाद में थीं। आपको मुतवक्किल ने मदीने से बुलवाकर सामरे में नज़रबन्द किया और कई लोगों की निगरानी आप पर क़ायम की। मगर आपके अख़लाक़े हमीदा ने हर एक को मुतास्सिर किया। आपकी ख़ामोश ज़िन्दगी सही इस्लामी सीरत की अमली मिसाल थी और हमेशा उस मिशन की जो तबलीग़े दीन व शरीअत का था हिफ़ाज़त करते रहे।

ऐसे मौक़ों पर जब जज़्बाते इन्सानी या तो मरऊब होकर दूसरे का हम रंग हो जाए या मुशतइल होकर मरने मारने पर तैयार हो जाए ये ज़ब्ते नफ़्त मेराजे इन्सानियत का नमूना था कि न अपने जाद-ए-अमल को छोड़ा जाता था और न तसादुम की सूरत पैदा की जाती थी।

मुतवक्किल का दरबार जहाँ शराब का दौर चल रहा था उसमें इमाम की तलबी और जामे शराब का पेश

बक़िया.....पेज 14 पर

इस्लाम में पर्दे का तसव्वुर

इस्लाम में पर्दे का तसव्वुर

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द

आज यूरोप वाले दावेदार हैं कि उन्होंने ख़वातीन को घरों की क़ैदोबन्द से आज़ादी दिलाई और उनके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त की, लेकिन अगर हम यूरोप की तारीख़ का मुताला करें तो हम पर इस दावे की हक़ीक़त खुल जायेगी। दरहक़ीक़त जिस वक़्त यूरोप में तेज़ी से Industrilisation होने लगा और कसरत से कारख़ाने खुलने लगे तो मज़दूरों की मज़दूरी में इज़ाफ़ा होने लगा और मज़दूरों ने तनख़्वाहों में इज़ाफ़े के लिए हड़तालें शुरु कर दीं। ऐसे वक़्त में कारख़ाना मालिकों और सरमायादारों ने नक़ली रिफ़ारमर्स के ज़रिये औरतों की आज़ादी का नारा बलन्द कर दिया और ज़ोरशोर से मुतालबा शुरु हुआ कि औरतों को भी मर्दों के शाना बशाना काम करने का मौक़ा मिलना चाहिए और घरों में उनको क़ैद करके मर्द उन पर ज़ुल्म कर रहे हैं, इस तरह से औरतों को कारख़ानों में लाया गया और मर्दों से आधी मज़दूरी पर उन्हें काम पर रखा गया। औरतों की आज़ादी का नारा महज़ एक धोका था और मक़सद सिर्फ़ कारख़ानों में उनका इस्तेहसाल था।

गुज़िश्ता मज़मून में, मैंने क़ुरआन मजीद की पर्दे से मुताल्लिक़ एक आयते करीमा का तज़किरा किया था। आज दूसरी आयत पेश कर रहा हूँ। सूर-ए-अहज़ाब आयत 59 ''ऐ नबी[स०] तुम अपनी अज़वाज, अपनी बेटियों और अहले ईमान की औरतों से कह दो कि वह अपनी चादरों को अपने ऊपर ओढ़ लिया करें, इससे उनकी शनाख़्त हो जायेगी और वह अज़िय्यत से बच जायेंगी। इस आयते करीमा के नुज़ूल का सबब ये है कि पर्दे का हुक्म आने से क़ब्ल मिस्ल ज़मान-ए-जाहिलियत के, तमाम औरतें ख़्वाह किसी की बहू या बेटियाँ हों या कनीज़ें और पस्त किरदार औरतें, सब एक तरह से मुँह खोल कर निकला करती थीं। आवारा और बदमाश लोगों की ये आदत थी कि वह कनीज़ों और पस्त औरतों को छेड़ते थे और उनसे फ़हश मज़ाक़ करते थे, इसी में कभी-कभी आली मरतबत और शरीफ़ ख़वातीन भी उनका शिकार बन जाती थीं। लोगों ने इस बात की शिकायत रसूलुल्लाह[स०] से की। उस वक़्त ये आयत नाज़िल हुई कि तुम्हारी औरतें चादरों को अपने ऊपर ओढ़ लिया करें। इस तरह से शरीफ़ और मोहतरम औरतों का तर्ज़े लिबास कनीज़ों और ख़राब क़िस्म की औरतों से मुमताज़ हो जायेगा और वह औबाशों की अज़ियत ये बच जयेंगी। मैं हरगिज़ ये नहीं कहता कि सारी औरतें पस्त होती हैं, मगर इतना ज़रूर कहूँगा कि उन्होंने शराफ़त और इज़्ज़त की वह निशानी छोड़ दी जिसकी क़ुरआन ने ताकीद की है, लेहाज़ा अगर ग़ैर मुहज़्ज़ब लोग उनसे गुस्ताख़ी करें तो ये भी इतनी ही क़ुसूरवार हैं जितने कि वह औबाश लोग।

पर्दे के मुख़ालिफ़ ज़ोर शोर से प्रोपगण्डा करते हैं कि पर्दा औरत की तौहीन है और क्योंकि इस्लाम ने औरत को कमतर समझा है, इसलिए उसे पर्दे में रखने का हुक्म दिया है। अगर ये बात सही होती है तो जो इस्लाम की इन्तिहाई बाअज़मत ख़वातीन हैं जिनको उम्मत की माँएं कहा गया है, जो अज़्वाजे रसूल[स०] हैं, वह पर्दे की क़ैद से आज़ाद होतीं, मगर हम ये देखते हैं कि उनके लिए पर्दे का हुक्म ज़्यादा सख़्त है। ''ऐ अज़्वाजे नबी[स०] तुम अपने घरों में रहा करो'' मुसलमानों से

ताकीद है कि जब तुम रसूले अकरम[स०] की बीवियों से कुछ माँगो तो पर्दे की आड़ से सवाल करो। आप इंसाफ़ की नज़र से पर्दे का एहतेमाम मुलाहेज़ा फ़रमाएं। पहले चादरें ओढ़ने का हुक्म हुआ। फिर नक़ाब डालने का हुक्म हुआ, फिर घर में बैठने का हुक्म हुआ, फिर मुसलमानों को हुक्म कि इसके बाद अगर कुछ माँगो तो पर्दे की आड़ से। अगर पर्दा सबबे तौहीन होता तो जिन ख़्वातीन की अज़्मत इतनी थी कि वह उम्मत की माँए क़रार दी जा रही हैं, उन पर पर्दे की इतनी पाबन्दी न होती। इससे साबित होता है कि पर्दा औरत की तौहीन के लिए नहीं ताज़ीम के लिए है।

मर्दों से मेलजोल कैसा, मर्दों की महफिलों में जाना कैसा, मर्दों के शाना बशाना काम करना कैसा? रसूलुल्लाह[स०] का इरशाद है, (तर्जुमा) ''जो शख़्स अल्लाह पर और यौमे क़यामत पर ईमान रखता है, वह कभी ऐसे मक़ाम पर नहीं सोयेगा, जहाँ उसकी साँस की आवाज़ नामहरम औरत के कानों तक जाए। हज़रत अली[अ०] का इरशाद हैः ''ऐ कूफ़ा के मर्दो! तुम्हारी ग़ैरत को क्या हो गया है कि तुम्हारी औरतें बाज़ारों में इस तरह चलती हैं कि नामहरमों से उनके शाने मस होते रहते हैं।'' हज़रत अली[अ०] ने औरतों से ख़िताब नहीं किया है, बल्कि मर्दों की ग़ैरत को ललकारा है। यानी अगर औरतें बाज़ारों में आयें तो मर्दों की ग़ैरत पर सवालिया निशान लग जायेगा।

इस्लाम ने औरतों को पर्दे में रख कर उनकी इज़्ज़त और वक़ार को मेराज बख़्शी है। इस्लाम का पैग़ाम है कि औरतें माहताबे इफ़्फ़त हैं, उनको आफ़ताब की रौशनी में लाकर बेनूर न बनाओ, वह आफ़ताबे इस्मत हैं उनको ऐसे रास्तों पर न चलाओ कि उन्हें गहन लग जाए। वह बेनज़ीर फूल हैं इनको नक़ाबों में रखकर हवसनाक निगाहों की गर्मी से बचाओ ताकि वह कुमहला न जाएं। वह बेनज़ीर जवाहरात हैं, उनको घर के ख़ज़ानों में हिफ़ाज़त से रखो। औरतों के वास्ते ज़ीनत है पर्दा। अगर ऐसा न होता तो क़ुरआन हूरों की मदह (तारीफ़) पर्दे से न करता। जन्नत वह मक़ाम है जहाँ न आवारगी है और न बद निगाही। सर्दी नहीं कि फूल सूखें, गर्मी नहीं कि कलियाँ मुरझाएं तो फिर हूरों के वास्ते पर्दे की क्या ज़रूरत है? मगर मालूम होता है कि हुस्न का जौहर है कि नक़ाब में हो और मोती की हिफ़ाज़त इसी में है कि सदफ़ में हो और मोती की आबो ताब इसी में है कि चादरे आब में हो लेहाज़ा हूरों का तज़किरा करते हुए इरशाद होता हैः ''जन्नत में वह पाकदामन हूरें हैं जो किसी तरफ़ आँख उठाकर नहीं देखतीं और वह हूरें जिनकी ज़ौजा होंगी, उनसे पहले न किसी जिन ने उन्हें हाथ लगाया होगा न किसी इन्सान ने।''

अगर मर्दों की बज़्म में जाना, उनसे हाथ मिलाना और उनकी तरफ़ निगाहें उठाना ऐब न होता तो अल्लाह कभी हूरों की इस तरह मदह न करता कि न किसी की तरफ देखती हैं, न किसी का हाथ उनसे मस हुआ है बेहतर था कि ख़ुदा यूँ तारीफ़ फ़रमाता कि बड़ी पढ़ी लिखी हैं, बड़ी अच्छी मुक़र्रिर हैं, कई किताबों की मुसन्निफ़ा हैं। कोई बज़्म ऐसी नहीं जिसकी सदर न हों। दुनिया जिन बातों को औरत का हुस्न जानती है, उनका कोई ज़िक्र नहीं, बल्कि उनके शर्मो हया और पर्दे का तज़किरा ''ये हूरें पर्दे के अन्दर रहती हैं'' तो अब समझिये कि जब जन्नत जैसे पाक व पाकीज़ा माहौल में हूरों का ज़ेवर पर्दा है तो ये दुनिया जहाँ क़दम-क़दम पर बदकारों का ख़ौफ है, बदनिगाहों का डर है, वहाँ पर पर्दा कितना ज़रूरी क़रार पायेगा।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा उर्दू 12 मार्च 2010[ई०])

ख़्वातीन रिज़र्वेशन बिल— चन्द मारूज़ात

ख़्वातीन रिज़र्वेशन बिल आज हर तरफ़ मौज़ूए गुफ़्तगू बना हुआ है। मुझ से भी इस मौज़ू पर कुछ मीडिया वालों ने सवालात किये थे, जिनके मैंने बहुत तफ़सीली जवाब दिये, लेकिन अफ़सोस की बात है कि मेरे पूरे बयान को नश्र किये बग़ैर दरमियान से सिर्फ़ एक सवाल के जवाब को नश्र किया गया और इसके माने भी ख़ुद ही मुतअय्यन कर लिये गये, जो हरगिज़ मेरा मक़सूद न थे। सवाल की नौइयत ऐसी थी कि हर मुसलमान का जवाब, जिसको थोड़ी सी भी क़ुरआनी अहकाम और अहादीसे शरीफ़ा की मालूमात है, यही होता। पूछने वाले ने बराहे रास्त पर्दे के इस्लामी हुक्म

पर हमला किया और ऐसी शख़सियतों की मिसालें दी थीं कि जिनका नामो नमूद और दुनियावी शोहरत व तरक़्क़ी पर्दा तर्क किये बग़ैर और नीम बरहना लिबास पहने बग़ैर मुमकिन न थी, जिसका जवाब देते हुए मैंने कहा था कि ख़ालिस दुनियावी नुक़्त-ए-निगाह से तो आपकी बात सही है कि पर्दा तर्क किये बग़ैर आपके बयान करदा ख़वातीन उन बलन्दियों तक नहीं पहुँच सकी थीं, लेकिन दीनी नुक़्त-ए-नज़र से (और मैं समझता हूँ कि हर मज़हब इसकी ताईद करेगा) आपकी मन्ज़ूरे नज़र ख़वातीन आइडियल क़रार नहीं पाती हैं, बल्कि इस्लाम में बेहतरीन औरत वह है जो बेहतरीन माँ हो, बेहतरीन बीवी, बेहतरीन बेटी और बहन हो। बेहतरीन लीडर बनना एक औरत के अव्वलीन फ़राएज़ में दाख़िल नहीं है, बल्कि बलन्द पाया लीडर दुनिया के सामने पेश करना उसका फ़रीज़-ए-अव्वलीन है। हज़रत ईसा[अ॰] बग़ैर बाप के तो आ गये, मगर बग़ैर माँ के नहीं आए। औरत ख़ुद नबी नहीं, मगर अम्बिया को अपनी आग़ोश में परवरिश देने वाली ज़रूर है। एक ख़ातून ख़ुद इमाम नहीं, मगर इमामों की माँ ज़रूर है। अगर रहबरी करना ख़वातीन के अव्वलीन फ़र्ज़ में दाख़िल होता तो एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया में कोई नबिय्या ज़रूर होती। मेरे नाम से कुछ चैनल्स पर ये पट्टी चलाई गई "औरत बच्चा पैदा करने की मशीनः कल्बे जवाद" कहाँ एक बेजान मशीन कहाँ माँ। एक औरत माँ बनने के बाद अल्लाह तआला के कई सिफ़ात की मज़हर बन जाती है। राज़िक़ अल्लाह है, यह वसील-ए-रिज़्क़ बनती है। रब वह है बच्चे को तरबियत ये दे रही है। रहमान व रहीम वह है उसकी रहमत का मज़हर माँ है। जवाद व करीम वह है उसका जूदो करम माँ में ज़ाहिर होता है। मुतकल्लिम अल्लाह है, मगर बच्चे को बोलना सिखाने वाली माँ है। क़ुरआने मजीद में माँ-बाप दोनों का एहतेराम वाजिब क़रार दिया गया है, मगर जहाँ औलाद के लिए ज़हमतें उठाने का तज़किरा है वहाँ सिर्फ़ माँ का नाम है। बाप का नहीं।

औरत का दूसरा बुनियादी फ़रीज़ा बीवी की हैसियत से है, इस बात के लिए बेशुमार अहादीसे रसूलुल्लाह[स॰] और मलफ़ूज़ाते आले रसूल[अ॰] मेरी पुश्तपनाह हैं। बाहर निकलने वाली अक्सर ख़वातीन का बेशतर वक़्त फ़ैशन करने और घर आकर उसके उतारने में सर्फ़ होता है। किसी रिसाले में एक शौहर की शिकायत शाया हुई थी उसका ख़ुलासा दर्ज हैः

"मेरी बीवी सोने के मौक़े पर अपने आपको मुकम्मल जोकर बना लेती है। वह एक बड़ी सी जालीदार टोपी अपने सर पर बाँधती है, ताकि सोते वक़्त उसके बाल ख़राब न हों, इसके बाद वह सोने का लिबास ज़ेबतन करती है, फिर सिंगारमेज़ पर बैठ कर अपना मेकअप उतारती है। अपने मुँह की क्रीम ख़ास मवाद से धोती है। जब वह पलटकर देखती है तो ऐसा महसूस होता है कोई और औरत सामने आ गई। उसकी भंवें तरशी हुई हैं और जब वह चेहरा साफ़ करती है तो भंवें भी साफ़ हो जाती हैं। उसके चेहरे की नागवार बू मेरे दिमाग़ तक पहुँचती है, क्योंकि खाल को झुर्रियों से बचाने के लिए वह जो क्रीम इस्तेमाल करती है, उससे उठने वाली काफ़ूर की बू मुझे क़ब्रिस्तान की याद दिलाती है। इसके बाद नौकरों को आवाज़ देकर चार खद्दर की सफ़ेद थैलियाँ मंगवाती है, वह पलंग पर लेट जाती है और नौकर चारो थैलियाँ उसके हाथों और पैरों पर चढ़ा देते हैं ताकि सोने में हाथों और पैरों के नाख़ुन न टूट जाएं और इस तरह आख़िरकार वह सो जाती है।"

ये है आज की (मार्डन) तरक़्क़ीयाफ़्ता बीवी जो बीवी के अलावा सब कुछ है। इसलिए जब पर्दे की बात आती है और शर्मो हया की गुफ़्तगू होती है तो इस क़िस्म की औरतें चिराग़ पा हो जाती हैं।

मसअला ये है कि बहुत से लोग ऐसे हैं जो नाम के मुसलमान तो रहना चाहते हैं, मगर इस्लामी क़वानीन पर चलना पसन्द नहीं करते, बल्कि चाहते हैं कि इस्लाम को अपनी मर्ज़ी पर चलाएं। ख़ुद ज़मान-ए-रिसालत[स॰] में भी ऐसे वाक़िआत मिलते हैं। कुछ सरदाराने क़बाएल रसूलुल्लाह[स॰] की ख़िदमत में आये कि हम मुलसमान होना चाहते हैं। इब्तेदाए इस्लाम में एक-एक आदमी की अहमियत थी और सरदारे क़बीला के मुसलमान होने

का मतलब था कि पूरा क़बीला मुसलमान हो जाए, मगर शर्तें पेश कीं कि जब हम आएं तो गुलामों और ग़रीबों को उठा दिया जाए। बाज़ ने शर्त लगाई हमें उनसे मुमताज़ जगह दी जाए। यहूदियों की शर्त थी शराब और सूद के हमारे कारोबार में इस्लाम न बोले। रसूलुल्लाह[स०] ने किसी की कोई शर्त क़ुबूल नहीं फरमाई। फ़रमाया कि तुम्हारी मर्ज़ी नहीं चलेगी, बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी चलेगी। मैं शर्तें मानने नहीं अपनी शर्तें मनवाने आया हूँ। चाहे इस्लाम माने चाहे न मानो। जब मानो तो समझकर और जब अल्लाह और रसूल[स०] पर यक़ीन आ जाए तो हर हुक्म पर आँख बन्द करके मानो। अबूजहल, अबूलहब, उक़बा, शैबा, वलीद वग़ैरा सब हक़ को पहचानते थे बेवक़ूफ़ न थे। सच्चाई जानते थे, मगर चाहते थे कि इस्लाम लाएं तो अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़। मैं तो समझता हूँ कि ये काफिर सरदाराने क़ुरैश आज के नक़ली मुसलमानों से बेहतर थे कि कम अज़ कम उन लोगों ने पैग़म्बर[स०] को धोका न दिया। पहले से बता दिया कि मुसलमान बनेंगे तो अपनी शर्तों पर, मगर ये आज के नक़ली मुसलमान कहते तो अपने को मुसलमान हैं मगर चलते हैं अपनी मर्ज़ी पर और अगर इन्हें कोई सही इस्लाम की तलक़ीन करे तो उसे कठमुल्ला और चौदह सौ साल पहले की दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारने वाला कहते हैं। दरअसल इनमें से कुछ तो वह है, जिन्हें ये कहने की हिम्मत नहीं कि हम इस्लाम को नहीं मानते हैं और कुछ वह हैं जो सिर्फ़ इस्लाम का मुखौटा लगाए हुए हैं ताकि हुकूमतों या सियासी जमाअतों में कोई ओहदा मिल जाए, क्योंकि हुकूमतों या सियासी पार्टियों को ऐसे नक़ली मुसलमानों की तलाश रहती है ताकि उन्हीं के ज़रिये ईस्लाम और मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाएं।

ये मौज़ू ऐसा है कि इस पर जितना भी लिखा जाए कम है। इस्लाम ने ख़्वातीन को जो ग़ैर मामूली हुक़ूक़ दिये हैं इन्शाअल्लाह उन पर गुफ़्तगू बाद में होगी। फिलहाल गुफ़्तगू ख़्वातीन रिज़र्वेशन बिल के बारे में है कि जिसके मुताल्लिक़ कुछ अच्छे पहलू पाये जाते हैं, वहाँ इसकी एक बहुत बड़ी ख़राबी ये सामने आती है कि बाज़ औक़ात इन्तिहाई क़ाबिल और लायक़ लोग रह जाते हैं और इन्तिहाई नाकारा और नालायक़ लोग रिज़र्वेशन का फ़ायदा उठा लेते हैं। रिज़र्वेशन दस्तूरे हिन्द की रूह के ख़िलाफ़ है, जहाँ कई जगह तहरीर है कि मज़हब, ज़ात-पात वग़ैरा किसी भी बुनियाद पर इम्तियाज़ नहीं बरता जायेगा। एक बात बहुत ज़ोर शोर से कही जा रही है क्योंकि औरतों को उनका हक़ नहीं मिलता है, इसलिए रिज़र्वेशन ज़रूरी है तो सवाल ये है कि गुज़श्ता हर इलेक्शन में 33 फ़ीसद से ज़ायद ख़्वातीन खड़ी होती हैं तो ख़ुद औरतों ने मर्दों के बजाए उनको वोट देकर मुन्तख़ब क्यों नहीं किया? इसका मतलब है औरतें मर्दों को रहबरी के लायक़ समझती हैं। फिर सवाल ये है कि आज इलेक्शन इतने महंगे हैं कि एम०पी० के इलेक्शन में करोड़ों ख़र्च होते हैं। इसलिए वह ख़्वातीन जो या तो ख़ुद करोड़पति हैं या उनके शौहर, वही पार्लियामेण्ट में पहुँचती हैं। एक अख़बारी तहक़ीक़ के मुताबिक़ सारी दुनिया में ख़्वातीन मेम्बराने पार्लियामेण्ट में 70 फ़ीसदी करोड़पति हैं। बक़िया यक़ीनन लखपति होंगी। फिर एक चुभता हुआ सवाल उभर रहा है कि मौजूदा या साबिक़ा ख़्वातीन मेम्बराने पार्लियामेण्ट ने औरतों के लिये क्या कारनामा अन्जाम दिया? सूबे की सबसे ताक़तवर शख़्सियत वज़ीरे आला की होती है। कई ख़्वातीन इस वक़्त चीफ़ मनिस्टर हैं और कुछ रह चुकी हैं। उन्होंने औरतों के हक़ में क्या कारहाए नुमायाँ अन्जाम दिये? एक ज़मीनी हक़ीक़त और सर उभार रही है कि बड़े-बड़े सियासी माफ़िया, सरमायादार, काला धन रखने वाले, अपनी औरतों को इलेक्शन लड़वायेंगे और उनके ज़रिये हुकूमत करेंगे। जैसा कि पंचायती इलेक्शनों में साफ़ सूरते हाल दिखाई दे रही है और बिहार की मिसाल सामने है कि जहाँ बज़ाहिर बीवी की हुकूमत थी लेकिन हुक्म शौहर का चलता था।

उसूली तौर पर तो हम मुवाफ़िक़ हैं कि जब रिज़र्वेशन मिलना है तो फिर मुसलमान औरतों के लिए कोटा मुक़र्रर होना चाहिए, लेकिन इस तल्ख़ हक़ीक़त को कैसे नज़रअन्दाज़ करें कि अब तक जितने भी मुसलमान असेम्बली या पर्लियामेण्ट पहुँचे हैं, पार्टी के वफ़ादार रहे। मुसलमानों के सामने बाबरी मस्जिद शहीद

हो गई, किसी कांग्रेसी मुसलमान के मुँह से उफ़ भी न निकल सकी। दस्तूरे हिन्द की दफ़ा 341 में पास हुआ कि अगर दलित मुसलमान हो जायेगा तो उसकी सारी सहूलतें ख़त्म हो जायेंगी, फिर मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ कि बौद्ध, जैन या सिख हो जायेगा तब सहूलतें बाक़ी रहेंगी। इतनी बड़ी नाइन्साफ़ी हुई, मगर किसी पार्टी का कोई मुसलमान सांस भी न ले सका।

ख़वातीन का हलक़-ए-इन्तेख़ाब लाटरी से तै होगा और हर बार इलेक्शन में हलक़-ए-इन्तेख़ाब तबदील हो जायेगा। इसका मतलब है जो इस दफ़ा जिस हलक़े से लड़ रहा है अगली मरतबा किसी दूसरे हलक़े से इलेक्शन लड़ेगा। इस तरह उसे जब दोबारा वोट माँगना नहीं है तो अब कौन अपने हलक़े के लिए काम करायेगा? इस तरह से वोटरों की अहमियत ख़त्म हो जायेगी। इन तमाम ज़मीनी हक़ीक़तों के बाद भी हम यही कहेंगे कि अगर ख़वातीन को रिज़र्वेशन मिल रहा है तो मुस्लिम ख़वातीन का कोटा मुक़र्रर हो, क्योंकि कुछ भी न मिलने से कुछ मिल जाना बेहतर है। मैं फिर दोहराउँगा कि मुस्लिम ख़वातीन जाएं, मगर इस्लामी क़वानीन की पाबन्दी का लेहाज़ करते हुए और अपनी मज़हबी और फितरी ज़िम्मेदारियों को निभाने के साथ-साथ।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 26 मार्च 2010ई०)

Noor-e-Hidayat Foundation

Registered with Commissioner Income Tax under section• **12A** (a) vide order dated 27-01-2010 & recognized under section **80G** (5) (vi) w.e.f. 01-04-2009 to 31-03-2011

बराए करम नूरे हिदायत फाउण्डेशन की ज़्यादा से ज़्यादा माली मदद करके दीनी, समाजी और इल्मी ख़िदमत में हमारा साथ दें। जिन हज़रात के ज़िम्मे मासिक "शुआ-ए-अमल" की सालाना फ़ीस बाक़ी है उनसे ख़ासतौर से गुज़ारिश है कि जल्द से जल्द बक़ाया रक़म मनीआर्डर, चेक या ड्राफ्ट की सूरत में अदा फ़रमाकर इस शरई क़र्ज़ को अदा फ़रमाएं।

Bank Accounts Details:

(1)**Name: Shua-e-Amal**
A/c Number: 559302010004271
Bank:Union Bank of India
Branch:Husainabad Lucknow (India)

(2) **Name:Noor-e-Hidayat Foundation**
A/c Number: 559302010003199
Bank: Union Bank of India
Branch: Husainabad Lucknow (India)

Noor-e-Hidayat Foundation

Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road,
Chowk, Lucknow-226003 (U.P.)
Phone: 0522-2252230 — 0522-4062731 — 9335276180
e-mail: noorehidayat@gmail.com — noorehidayat@yahoo.com
website: www.noorehidayatfoundation.com — www.al-ijtihaad.com

इमाम मुहम्मदे बाक़िर अलैहिस्सलाम: फ़िक्री इन्क़ेलाब के अलमबरदार

प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला, अलीगढ़

आसमाने विलायत के पाँचवे ख़ुर्शीद का नाम मुहम्मद और लक़ब बाक़िर है। हमारे अइम्मा में सिर्फ़ मुहम्मद बाक़िर हैं जो माँ-बाप दोनों तरफ़ से पैग़म्बरे गिरामी की औलाद हैं। आपकी वालिदा हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह इमाम हसन की दुख़्तरे गिरामी थीं। इमाम बाक़िर[अ०] 57[हि०] यानी इमाम हसन की शहादत के पाँच साल बाद और आशूर-ए-हुसैनी से चार साल क़ब्ल पैदा हुए।

पैग़म्बर[स०] दीन लाए और अली[अ०] और हसन[अ०] ने "जेहाद" और "सुलह" के ज़रिये "जाहिलियत से बग़ावत" और उमवियों के बतदरीज (step by step) घाव करने वाले जरासीम का मुक़ाबला किया और मकतब के असालत की हिफ़ाज़त की कोशिश की। इमाम हुसैन[अ०] ने दूसरे असलहे यानी शहादत के ज़रिए सोए हुए मुसलमानों को जगाया और दीन के पौधे को अपने ख़ून से सींच कर बारआवर किया। और उसके फूलने-फलने की ज़मानत की। जनाब ज़ैनब और सय्यदे सज्जाद "ख़ूने हुसैन" के पैग़ाम्बर थे। उन्होंने अपने फ़रीज़ों को "ख़िताबत" और "दुआ" के ज़रिए अन्जाम दिया। यहाँ तक कि दीन की तदवीन व इशाअत की बारी आई। इस अज़ीम ज़िम्मेदारी का बार इमाम मुहम्मद बाक़िर ने अपने काँधों पर उठाया।

इमाम मुहम्मद बाक़िर ने दीन फ़ैलाना क्यों ज़रूरी समझा?

दीन को दलीलों के साथ फैलाना चन्द एतेबार से बहुत ज़रूरी थाः

I- पहले इस वजह से कि इससे पहले के दौर में तलवार के ज़रिये जिहाद, सियासी इक़्दार और ज़ुल्मो सितम, मसाएब और घुटन के माहौल में अइम्मा अहलेबैत के नुक़्त-ए-नज़र की तदवीन इस्तेदलाली अन्दाज़ में आम करने का मौक़ा नहीं मिला था। इसका नतीजा ये हुआ था कि अकसर ज़हनों में शिया अक़ीदों के अकसर गोशे वाज़ेह नहीं हो सके जबकि इसके इन्क़ेलाबी और निज़ाइ पहलू ज़्यादा सख़्ती के साथ ज़हन नशीन थे। उन अक़ीदों और फ़िक्री बुनियादों का ग़ैर वाज़ेह होना इन्हेराफ़ और तफ़रक़े की सूरत में ज़ाहिर हुआ। उस ज़माने में शियों में केसानिया और ज़ैदिया की तरह दूसरे फ़िरक़े भी वजूद में आ गए थे। इन मसलकों और फ़िरक़ों की तमामतर तवज्जो सियासी और जंगी मसाएल की तरफ़ थी और इमामत के अक़ीदे से बख़ूबी वाक़िफ़ न होने की वजह से वह अइम्मा की रहबरी से दूर थे। इन अस्बाब की वजह से इस बात की ज़रूरत थी कि जल्द अज़ जल्द फ़िक़्ही और कलामी मसाएल की इशाअत के लिए शीई नज़रियात की तदवीन हो जाए।

II- गुज़श्ता हादियाने दीन की कोशिशों के नतीजे में ख़ासकर आशूर-ए-हुसैनी के बाद सियासी नुक़्त-ए-नज़र से शिया काफ़ी मज़बूत हो गए थे। उनका वजूद दाएमी शक्ल इख़्तियार कर चुका था अब इस बात की ज़रूरत थी कि उन की फ़िक्र, अक़ीदे और तहज़ीब की जड़ों को मज़बूत किया जाए।

III- "मकतबे फ़िक्र" की तदवीन और उसको दलीलों के साथ फैलाने की तीसरी वजह ये थी कि उसी ज़माने में एक तरफ़ यूनान, हिन्द और क़दीम ईरान का फ़िक्री और फ़लसफ़ी रवानी, मसीही, बौद्ध, ज़रतश्ती, मानवी और मज्द की अक़ाएद रवानी, राहिबाना और सूफ़ियाना मसलकों की कशिश, तो दूसरी तरफ़ यूनानी फ़लसफ़ियों के डेमोक्रेसी, नौ अफ़लातूनी और अरस्तुवी मकातिबे फ़िक्र दुनियाए इस्लाम में नुफ़ूज़ कर रहे थे। ग़ैर मुस्लिमों की तहरीरों का तर्जुमा और कलामी बहस

और मुनाज़रे शुरु हो चुके थे। इस तरह इस ज़माने में पैग़ामे हक़ इस्लाम के वुजूद को सियासी ख़तरे से ज़्यादा फ़िक्री, तहज़ीबी और दूसरे निज़ामों और मसालिक की फ़िक्री और तहज़ीबी यलग़ार का ख़तरा था। इसी वजह से इमाम बाक़िर और उनके बाद इमाम सादिक़, जो क़ौम के हक़ीक़ी रहनुमा और इस्लाम की इज़्ज़त के निगेहबान थे, उन्होंने नज़रियाती मुहाज़ पर इस्लाम की कोशिश की।

इसी ज़माने में बरसरे इक़्तेदार निज़ाम "दरबारी इस्लाम" की तदवीन की फ़िक्र में था और उसे "हक़ीक़ी इस्लाम" के नाम से पहचनवाने की फ़िक्र में था, ऐसा इस्लाम जो उमवी और अब्बासी ख़लीफ़ाओं की ख़ुदसरी के लिए साज़गार और उस वक़्त की "मौजूदा हालत" का मुहाफ़िज़ हो। हुकूमत से वाबस्ता मुहद्दिसीन, फ़ुक़हा और ख़तीब इस सिलसिले में शिद्दत से कोशिश कर रहे थे। हज़ारों जाली हदीसें आम हो चुकी थीं। इस बात का ज़बरदस्त ख़तरा पैदा हो गया था कि कहीं इन्क़ेलाबी इस्लाम की इन्क़ेलाबी तालीमात को बदल न दिया जाए और फ़रामोश न कर दिया जाए, इन हालात में हुकूमत से सियासी या फौजी मुक़ाबले से ज़्यादा ज़रूरी था कि हक़ीक़ी इस्लाम और "नज़रियाती मुक़ाबले" की तदवीन की जाए।

पहली बार इस ज़माने के सियासी हालात ने इस क़दर मोहलत दी थी कि शिया निस्बतन आज़ाद फ़िज़ा में अपने अक़ाएद के नुक़ूश को वाज़ेह कर सकें। इस ज़माने में बनी उमय्या की हुकूमत तबाही की तरफ़ जा रही थी। इस्लामी ममलकत के अतराफ़ो जवानिब में मुसल्लह तहरीकें सर उठा रही थीं, उमवी इक़्तेदार ख़ात्मे की तरफ़ था और अब्बासियों का इस्तेबदाद अभी बरसरे इक़्तेदार नहीं आया था। दुश्मनाने शिया आपस में एक दूसरे से बरसरे पैकार थे। नतीजे के तौर पर शियों को अहलेबैत की तहज़ीब की तबलीग़ और तरवीज के लिए मुनासिब मौक़ा मिल गया था।

इन ही वूजूहात की बिना पर इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ॰] के ज़माने से एक नया दौर शुरु होता है जो शिया नज़रियात की तदवीन और उसको इस्तेदलाली तरीक़े से पेश करने और फ़िक्री और तहज़ीबी बुनियादों को मुस्तहकम करने का दौर है। इमाम बाक़िर के ज़माने में इस दौर का आग़ाज़ हुआ और इमाम सादिक़ के ज़माने में ये अपने उरूज पर पहुँच गया।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ॰] के ज़माने के हालात

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ॰] के ज़माने के हालात सय्यदे सज्जाद के घुटन वाले दौर से क़दरे मुख़्तलिफ़ थे। अब उमवी हुकूमत की बागडोर हज्जाज जैसे जल्लाद के हाथ में थी। इसके बावजूद अइम्मा के लिए बहुत सारी पाबन्दियाँ और महदूदियतें थीं। हालात ग़ैर मुतवाज़न थे। कभी किसी ख़ूँख़्वार हाकिम के इख़्तियारात बढ़ जाने से हालात संगीन हो जाते थे तो कभी नर्म मिज़ाज ख़लीफ़ा के बरसरे इक़्तेदार आने से हालात में कुछ नसबी आज़ादी पैदा हो जाती थी, जैसे उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ के दौर में इमाम को निस्बतन आज़ादी हासिल थी। इस वजह से कभी इमाम की ज़िन्दगी का कोई रुख़ सय्यदे सज्जाद की ज़िन्दगी से मिलता-जुलता है तो कभी कोई रुख़ इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] के ज़माने से मुशाबेहत रखता है।

पाँचवें इमाम का दौर 95[हि॰] से शुरु होता है। ये ज़माना मुक़तदर तरीन उमवी ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक की ख़िलाफ़त का आख़िरी दौर है। 96[हि॰] में वलीद की मौत हुई। इसके बाद सुलेमान बिन अब्दुल मलिक उसका जानशीन हुआ। उसने बारह साल तक हुकूमत की। इसके बाद अलत्तरतीब उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, यज़ीद बिन अब्दुल मलिक और हिशाम बिन अब्दुल मलिक मसनदे ख़िलाफ़त पर क़ाबिज़ हुए।

वलीद बिन अब्दुल मलिक ने अपनी ख़िलाफ़त के आख़िरी दौर में हिशाम इब्ने इस्माइल को मदीना की गवरनरी से माज़ूल करके उसकी जगह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को मुक़र्रर किया। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ एक चौबीस साला जवान था और इब्तेदा ही से दीन की तरफ़ माएल था। इस वजह से उसने मदीने में आते ही सबसे पहला काम जो किया वह ये था कि इमाम बाक़िर[अ॰] के हुज़ूर में हाज़िर हुआ और ताज़ीम बजा लाया। इस तरह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के दौर में

इमाम बाक़िर को असल इस्लाम फैलाने और फ़ज़ाएले अहलेबैत को मुताआरफ़ कराने का मुनासिब मौक़ा मिला।

वलीद बिन अब्दुल मलिक की मौत के बाद उमवियों की ताक़तवर हुकूमत ज़वाल पज़ीर होने लगी। सुलेमान बिन अब्दुल मलिक जो वलीद का जानशीन हुआ, ऐय्याश और इन्तिज़ामी लेहाज़ से अब्दुल मलिक और वलीद का हमपल्ला न था। इसी वजह से उसके दौर में उमूरे हुकूमत की बुनियाद में नुमायाँ कमज़ोरियाँ वाक़े हुईं।

सुलेमान के बाद उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने दो साल पाँच माह हुकूमत की। उमवी ख़लीफ़ाओं में सिर्फ़ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ही वह तनहा ख़लीफ़ा था जिसने जुल्मो सितम से इज्तेनाब किया। उसका झुकाव निस्बतन इस्लाम की तरफ़ था। उसने इमाम, शियों और अलवियों से मुताल्लिक़ सियासत में नम्री बरती और मिंबर पर जनाबे अमीर की शान में नफ़रीन जैसी मज़मूम हरकत को मौक़ूफ़ कर दिया। इस वजह से उस दौर में इमाम बाक़िर को मआरिफ़े इस्लामी की तरवीज का मुनासिब मौक़ा मिला।

उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़, जो उमवी दरबारियों के हाथों ख़त्म कर दिया गया, इसके बाद यज़ीद बिन अब्दुल मलिक बरसरे इक़्तेदार आया। उसने चार साल एक माह हुकूमत की, मगर वह भी ज़्यादातर महल और ऐश व नोश में मशग़ूल था और बनी उमैय्या के जल्द ज़वाल का बाइस बना, यहाँ तक कि हुकूमत की बागडोर हिशाम बिन अब्दुल मलिक के हाथों में आई।

जब हिशाम ने इनाने हुकूमत संभाली, उस वक़्त इराक़ और अतराफ़ में मरकज़ी हुकूमत का वाली ख़ालिदुल क़सरी था। उसने शियों के लिए निस्बतन नम्री दिखाई मगर शीआने अली के साथ उसकी नम्री का हाल जल्द ही हुकूमत पर खुल गया। चुनानचे उसे माज़ूल कर दिया गया। और उसकी जगह यूसुफ बिन उमर अस्सक़फ़ी को जो ख़ूँ-आशाम और जल्लाद उमवी हाकिमों में से था, हाकिम मुक़र्रर किया गया। चुनानचे फिर सरकोबी और जुल्म की सियासत बहाल हो गई। मशहूर मोअर्रिख़ दैनूरी ने लिखा हैः- "जो भी बनी हाशिम से कुछ ताल्लुक़ रखता था क़ैद में डाल दिया गया"।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] अपनी ज़िन्दगी में इसी क़िस्म के सियासी उतार-चढ़ाव से दोचार रहे। इसी वजह से हम देखते हैं कि इमाम के दौर के बाज़ हिस्से सय्यदे सज्जाद के दौर से मिलते हैं और बाज़ हिस्से इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के दौर से मिलते जुलते हैं।

घुटन के दौर में इमाम[अ०] की हिक्मते अमली

घुटन के दौर में इमाम बाक़िर ने वही रवय्या इख़्तियार किया जो सय्यदे सज्जाद ने इख़्तियार किया था और जिद्दोजोहद का वही तरीक़ा अपनाया जो सय्यदे सज्जाद का था। उस दौर में इमाम ज़्यादातर रूहानी रहनुमाई और किरदार साज़ी का फ़र्ज़ अन्जाम देते हैं। उनके लिए सबसे अहम काम "पैग़ाम" की हिफ़ाज़त था इमाम पोशीदा और नीम ज़ाहिरी तौर पर शार्गिदों की तरबियत में मशग़ूल रहे।

बनी उमय्या के हुक्मराँ भी एक तरफ़ तो शियों का क़त्लेआम कर रहे थे मगर दूसरी तरफ हेजाज़, इराक़, फ़ारस और तमाम इलाक़ों के लोगों के नज़दीक अइम्मा की मक़बूलियत, असर और क़द्रो एहतेराम के पेशे नज़र कर्बला से मिले हुए शिकस्त के तजुर्बे के पेशे नज़र उनमें अइम्मा को एलानिया शहीद करने की जुराअत नहीं थी। इसी वजह से वह ज़हर ख़ूरानी पर उतर आए थे और ये इस बात का सुबूत था कि वह अवाम में इमामों के असरात से ख़ौफ़ज़दा थे।

ख़ुदग़रज़ और ज़ालिम उमवी ख़लीफ़ा इमामों के इल्मी और रूहानी मक़ाम से वाक़िफ़ थे। अक्सर तारीख़ी वाक़िआत ज़ाहिर करते हैं कि हस्सास और नाज़ुक मौक़ों पर अपनी रहनुमाई के लिए वह इमामों के मोहताज हुए हैं। अइम्म-ए-अहलेबैत ने भी निज़ामे ख़िलाफ़त को कुचलने और रुसवा करने का कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं दिया। यहाँ तक कि दरबारे ख़लीफ़ा में भी इमाम ने पैग़म्बर और आले पैग़म्बर के फ़ज़ाएल का एलान किया जिससे अबुसुफ़यान व आले सुफ़यान की मज़म्मत होती है। इस नुकते से साफ़ ज़ाहिर होता है कि मुसलमान मुआशरे की रहबरी उमवियों ने ग़सब की है फिर भी अगर किसी मामले में वह देखते थे कि

इस्लाम की इज़्ज़त का मामला है तो जनाब अमीर की तरह अपनी राय पेश करने और रहनुमाई से गुरेज़ नहीं करते थे। जैसा कि "अल-महासिन वल मसावा" (बैहक़ी, जि-2, पे-323) में आया है कि जब ख़लीफ़ा ने ग़ौर किया कि इस्लामी हुकूमत में चलने वाले रूमी सिक्कों पर तसलीसी जुमला लिखा होता है, तो उसने हुक्म दिया कि सिक्कों पर इसके बजाए शेआरे तौहीद नक़्श किया जाए। शहंशाहे रूम ने ख़लीफ़ा को धमकी दी कि अगर ऐसा हुआ तो वह हुक्म देगा कि सिक्कों पर पैग़म्बर के लिए इहानत आमेज़ जुमले नक़्श करें। ख़लीफ़ा आजिज़ हो गया, जब कोई उसे इस मख़मसे से नजात न दिला सका तो मजबूरन उसने इमाम बाक़िर को मदीने बुलावाया। चूँकि इस्लाम का मामला दरमियान में आ गया था, इसलिए इमाम ने ख़लीफ़ा की रहनुमाई की कि मुसलमान कारीगरों को जमा करके इस्लामी टक्साल क़ायम किया जाए जिसमें इस्लामी सिक्के ढाले जाएं। इस तरह इस्लामी ममलकत में पहली बार रूमी सिक्के तर्क कर दिये गए और इस्लामी सिक्के रायज हुए। ग़ैरों के मुक़ाबले में हमारे अइम्मा मुसलमान मुआशरे के तमाम मसालेह को पेश नज़र रखते थे।

मगर इसी हाल में इमाम ने निज़ामे ज़ुल्म पर हमला, ज़ालिम से मुक़ाबला और हाकिमों से नफ़रत का इज़हार किया है जबकि हुकूमत का अमला इमाम की मसरूफ़ियतों से बाख़बर रहता था। एक बार अब्दुल मलिक जो बनी उमय्या का क़वी तरीन ख़लीफ़ा था मदीना गया। हाकिमे मदीना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने पूछाः "आप वलीद से मिलने जाएंगे?" इमाम ने नफ़ी में जवाब दिया। मगर फिर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ये नहीं पूछा कि क्यों नहीं जाएंगे, इसलिए कि वह जानता था कि इमाम वलीद को ख़लीफ़ा नहीं समझते। इस से ज़ाहिर होता है कि इमाम का मनफ़ी मुक़ाबला इस क़दर एलानिया होता था जिसकी हुकूमत को ख़बर रहती थी।

मुमकिन है कि ये सवाल पैदा हो कि जब इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] सियासी, सक़ाफ़ती और फ़िक्री सरगर्मियों में मशग़ूल थे, तो उसको उमवी ख़ुलफ़ा ने किस तरह बर्दाश्त किया और उन्हें क़त्ल या क़ैद क्यों नहीं कर दिया? इसका जवाब ये है कि पहली बात तो ये है कि वलीद के बाद उमवी हुकूमत की हालत काफ़ी सक़ीम थी। दुनियाए इस्लाम में चारों तरफ़ तहरीकें और बग़ावतें सर उभार रही और अरबाबे हल्लो अक़्द शोरिशों को दबाने में शबो रोज़ मशग़ूल थे। दूसरी बात ये है जैसा कि हम बता चुके हैं कि कर्बला में हुसैनी कारनामे और ज़ैनब व सय्यदे सज्जाद के इफ़्शाए हक़ीक़त की वजह से यज़ीद के बाद उमवी ख़लीफ़ाओं के लिए ज़रूरी हो गया था कि वह इमामों से बराहे रास्त उलझने या उन्हें क़ैद करने से गुरेज़ करें। चुनानचे उन्होंने ने मुनाफ़िक़ाना तर्ज़े अमल इख़्तियार किया यानी हक़ीक़तन वह खुद इमाम के कितने ही दुश्मन क्यों न हों बज़ाहिर अवाम के सामने उनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे, मसलन जब वलीद बिन अब्दुल मलिक मदीना आया और मस्जिद में इमाम को देखा तो सरोक़द ख़ड़ा हो गया और इमाम को अपने सामने बिठाया, हालांकि अन्दुरूनी तौर पर वलीद इमाम का सख़्त दुश्मन था मगर अवाम के सामने इमाम से अपना लगाव ज़ाहिर करता था और ये हुसैन[अ०] की शहादत और ज़ैनब व सय्यदे सज्जाद की मज़लूमियत का नतीजा था जिसने दुनिया के क़वी तरीन इन्सान को मज़लूमियत से ख़ौफ़ज़दा कर दिया था।

निस्बतन आज़ादी के दौर में इमाम की हिक्मते अमली

जैसा कि हम बता चुके हैं कि पाँचवें इमाम का दौर उतार चढ़ाव का दौर था। शियों की फ़िक्री और तहज़ीबी सरगर्मी के लिए कभी-कभी इस क़दर मौक़ा मिल जाता था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर ने इससे फ़ायदा उठाया और तदवीने मकतब और मआरिफ़े अहलेबैत को आम करने का काम शुरु कर दिया। (इसी काम को इमाम सादिक़ ने मुकम्मल किया) इमामों का इदराक आम ज़ी फ़हम हज़रात जैसा न था बल्कि "हिक्मते खुदादाद" थी और ये हज़रात फ़ैज़ाने इलाही के सरचश्मे से सैराब होते थे। मगर हमारे लिए अहम नुक़ता ये है कि हम ये देखें कि अइम्मा ने किन हालात में किस क़िस्म की हिकमते अमली इख़्तियार की, क्या-क्या इक़दामात किये, किन हालात में "पैग़ाम" को फैलाया

और किन सूरतों में पैग़ाम को निज़ाम की शक्ल में ढाला।

मुख़तलिफ़ वुजूहात की बिना पर जिनकी वज़ाहत इस बाब के इब्तेदाई सफ़हात में की जा चुकी है इमाम बाक़िर ने महसूस किया कि नज़रियात की तबलीग़ का सही वक़्त आ पहुँचा है। चुनानचे मुख़तलिफ़ तरीक़ों से उन्होंने नज़रियात की तबलीग़ की इब्तेदा कर दी।

इमाम मुहम्मद बाक़िर^{अ०} ने मआरिफ़े इतरते अतहार को आम करने की ग़रज़ से एक अज़ीम दानिश्गाह की बुनियाद रखी जहाँ दुनियाए इस्लाम की इल्मी हलके से इमाम के दर्स में सैकड़ों और हज़ारों की तादाद में मुमताज़ शख़सियतें हाज़िर होती थीं और इस मआरिफ़े इलाही के सरचश्मे से इक्तेसाबे फ़ैज़ करती थीं।

इस ख़ुर्शीदे इमामत से कस्बे फ़ैज़ करने में इस्लाम के तमाम फ़िरक़ों के लोग शामिल हैं और अहले सुन्नत के जय्यद उलमा में से कुछ हज़रात को इमाम बाक़िर की शार्गिदी पर फ़ख़्र है जिनमे ज़ोहरी, अता बिन जुरैह और क़ाज़ी हफ्स बिन ग़यास का नाम लिया जा सकता है।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के शार्गिदों ने हदीस तफ़सीर, फ़िक़्ह, कलाम और मआरिफ़े इस्लामी के तमाम शोबों को इल्मो इरफ़ान की दौलत से मालामाल कर दिया है और इन मैदानों में शीआी नुक़्त-ए-नज़र को मुदव्वन किया है। मिसाल के तौर पर अबान बिन तग़लब जो इल्मे क़राअते क़ुरआन और फ़िक़्हुल लुग़त में यकताए ज़माना थे। वह पहले शख़्स थे जिन्होंने क़ुरआन की मुश्किल ताबीरों की शरह किताबी सूरत में ''ग़राएबुल क़ुरआन'' के नाम से लिखी। अबुजाफ़र मुहम्मद बिन हसन, अबी सरह और इस्माईल बिन अब्दुर्रहमान अस्सौदी जैसे अफ़राद अपने ज़माने के अज़ीम तरीन मुफ़स्सिरीने में से थे और मुसलमानों के लिए इल्मे तफ़सीर के इरतेक़ा की सिम्त राहनुमा और संगेमील की हैसियत रखते थे। जाबिर बिन यज़ीद जोअ़फ़ी और यह्या बिन क़ासिम अबुबसीर असदी अज़ीम मुहद्दिसीन में से थे। मुहम्मद बिन मुस्लिम ने इमाम बाक़िर से तीस हज़ार हदीसें नक़ल की हैं। इल्मुल कलाम में अब्दुल्लाह बिन मैमून और ज़ुरारा बिन अअ़्युन ने इल्मे कलाम के शीआी नुक़त-ए-नज़र को मुदव्वन किया। फ़िक़्ह में आमिर बिन मुआविया ज़हनी, सालिम बिन अबी हफ़्सा, अबु यूनुस कूफ़ी और यह्या बिन क़ासि अबु बसीर असदी जैसे अफ़राद ने शिया फ़िक़्ही निज़ाम की तदवीन के सिलसिले में अहम क़दम उठाए। ये सब के सब इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] की दर्सगाह के परवरदा थे। (किताब- उस्वहा-ए-जावेद से)

बक़िया....... इमाम मुहम्मद तक़ी(अ०) व इमाम अली नक़ी(अ०) की सीरत

किया जाना और आपके इनकार पर ये फ़रमाइश कि कुछ अशआर ही सुनाइये और आपको इस मौक़े से वाज़ के लिए गुन्जाइश निकालना और बेएतेबारि-ए-दुनिया और मुहासब-ए-नफ़्स की दावत पर मुशतमिल वह अशआर पढ़ना जिन्होंने इस महफिले ऐश को मजलिसे वाज़ में तबदील करके वह असर पैदा किया कि हाज़िरीन ज़ारो क़तार रोने लगे और बादशाह भी चीखें मार-मार कर गिरया करने लगा। ये उन्ही हज़रत ज़ैनुलआबेदीन[अ०] के वारिस का काम हो सकता था जिन्होंने दरबारे इब्ने ज़ियाद व यज़ीद में इज़हारे हक़ाएक़ के किसी मौक़े को कभी नज़रअन्दाज़ नहीं किया।

क़ैद के ज़माने में आप जहाँ भी रहे आपके मुसल्ले के सामने एक क़ब्र खुदी हुई तैयार रहती थी। ये ज़ालिम ताक़त को उसके बातिल मुतालब-ए-इताअत का एक ख़ामोश और अमली जवाब था यानी ज़्यादा से ज़्यादा तुम्हारे हाथ में जो है वह जान का ले लेना मगर जो मौत के लिए इतना तैयार हो वह ज़ालिम हुकूमत से डर कर बातिल के सामने सर क्यों ख़म करने लगा।

फिर भी मिस्ल अपने बुज़ुर्गों के हुकूमत के ख़िलाफ़ किसी साज़िश वग़ैरा से आपका दामन ऐसा बरी रहा कि बावजूद दारुस्सलतनत के अन्दर मुस्तक़िल क़याम और हुकूमत के सख़्त तरीन जासूसी निज़ाम के आपके ख़िलाफ़ कोई इल्ज़ाम कभी आएद नहीं किया जा सका हालांकि अब्बासी सलतनत अब कमज़ोर हो चुकी थी। और वह दम तोड़ने के क़रीब थी मगर आले मुहम्मद[अ०] न उन हुकूमतों को हमेशा अपनी मौत मरने के लिए छोड़ा। उनके ख़िलाफ़ कभी किसी इक़दाम की ज़रूरत महसूस नहीं फरमाई।

मुख्य समाचार

न्युयार्क में ईरानी राष्ट्रपति ने

अमरीका को खरी-खरी सुनाई

ईरानी राष्ट्रपति ने जौहरी हथियारों के फैलाव की रोक-थाम के बारे में एक कान्फ्रेंस में तक़रीर करते हुए अमरीका पर कड़ी नुक्ताचीनी की है। डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने कहा कि अमरीका ने जौहरी हथियार बनाकर ऐसे ही हथियार बनाने के लिए दूसरे मुल्कों की हौसला अफ़ज़ाई की और इस तरह दुनिया में जौहरी हथियारों की एक दौड़ शुरु हो गई है। उन्होंने अपनी तक़रीर में अमरीका पर इल्ज़ाम लगाया कि वह "झूटे बहाने" के तहत ईरान समेत दूसरे मुल्कों को अपने जौहरी हथियारों के साथ धमकियाँ देता रहा है। उन्होंने ये भी कहा कि इस बात का कोई क़ाबिले एतेमाद सुबूत नहीं है कि उनका मुल्क जौहरी अस्लहा तय्यार कर रहा है। अमरीका, बिट्रेन और फ्रांस के नुमान्दे ईरानी लीडर की तक़रीर के दौरान कान्फ्रेंस से वाकआउट कर गए। इस से पहले संयुक्त राष्ट्र संघ के सेक्रेट्री जनरल बान-की मून ने इसी कान्फ्रेंस का इफ्तेताह करते हुए कहा कि अपने जौहरी प्रोग्रामों के बारे में "शुब्हात और अन्देशों" को दूर करने की ज़िम्मेदारी ईरान पर है। अमरीका और उसके इत्तेहादी ईरान पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि वह खुफ़िया तौर पर जौहरी अस्लहा तय्यार करने की कोशिश कर रहा है ईरान का कहना है कि उसका जौहरी प्रोग्राम पुर-अम्न मक़ासिद के लिए है। मिस्टर बान-की मून ने कहा कि वह ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद की हौसला अफ़ज़ाई करते हैं कि वह "तामीरी रवय्या इख़्तियार करें" और जौहरी ईंधन जुटाने के लिए वह तजावीज़ क़ुबूल कर लें, जो एटमी तवानाई की बैनुलअक़्वामी एजेन्सी ने पेश की हैं। महीना भर जारी रहने वाली ये कान्फ्रेंस न्युयार्क शहर में संयुक्त राष्ट्र संघ के हेडक्वार्टर में हो रही है।

इस्राईली जेलों में क़ैद औरतों के हौसले बलन्दः तमीमी

फिलिस्तीनी ख़ातून क़ैदी अहलाम अत-तमीमी ने कहा है कि तलमून्द जेल में वेसी ही ख़राब सूरते हाल है जो इस्राईल की दूसरी जेलों में पाई जाती है। मरकज़े इत्तेलाआत फिलिस्तीन के मुताबिक़ इन ख़यालात का इज़हार उन्होंने मण्डेला इंस्टीट्यूट की सरबराह बोथाया डेकमाक से बातचीत में किया जिन्होंने हाल ही में इस जेल का दौरा किया। डेकमाक एक वकील होने के साथ-साथ इन्सानी हुक़ूक़ की कारकुन भी हैं उनका कहना है कि उसे जेल हुक्काम ने जेल में मुआयने की इजाज़त बिला ताख़ीर दी लेकिन वहाँ उसने जेल इन्तिज़ामिया का क़ैदियों के साथ तौहीन भरा रवैया देखा। वह क़ैदियों की भूक हड़ताल का तौहीन आमेज़ अन्दाज़ में मज़ाक़ उड़ा रहे थे। अहलाम तमीमी ने डेकमाक से गुफ़्तगू करते हुए ये बात ज़ोर देके कही कि क़ैद ख़वातीन के हौसले बुलन्द हैं और वह इस्राईली जेलों में फिलिस्तीनी क़ैदियों के साथ यकजहती का भरपूर मुज़ाहेरा करेंगे यहाँ तक कि उनके मुतालबे पूरी नहीं हो जाते। मण्डेला इंसटीट्यूट के मुताबिक़ हाशरोन जेल में, जेल इन्तिज़ामिया की तरफ से सख़्त इक़दामात उठाने के बाद ख़वातीन क़ैदियों की हालत बहुत ख़राब हो गई है। जिन्हें मुहाजिर कैम्प की क़ाहिरा सादी ने डेकमाक से बातचीत करते हुए कहा कि वहाँ क़ैदी बहुत ख़राब हालत में हैं। सादी जो चार बच्चों की माँ है, ने कहा कि वह दो बच्चों से मिल नहीं सकती क्योंकि वह दोनों, सोलह साल के हो चुके है और जेल इन्तिज़ामिया उन्हें मुलाक़ात की इजाज़त नहीं दे रही है। क़ैद ख़वातीन ने डेकमाक से बातचीत करते हुए वाज़ेह किया कि वह अपने हुक़ूक़ के लिए जद्दोजेहद जारी रखेंगी।

अमरीका और इस्राईल दुनिया में तमाम जुर्मों के जिम्मादार:ईरानी राष्ट्रपति

ईरान के राष्ट्रपति डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने कहा है कि अमरीका और इस्राईली हुकूमत दुनिया में तमाम जुर्मों की ज़िम्मादार है। ईरान के सरकारी ख़बर देने वाले इदारे के मुताबिक़ आलमी यौमे मज़दूर के हवाले से मुनअक़िदा तक़रीब से ख़िताब करते हुए उन्होंने कहा कि अमरीका ने इराक़ में 13 लाख 50 हज़ार और अफ़ग़ानिस्तान में एक लाख से ज़्यादा शहरियों को हलाक किया है।

उन्होंने कहा कि अमरीकी और इस्राईली हुकूमत खुद ही दहशतगर्दों को तरबियत देती है। अमरीका और इस्राईल अफ़ग़ानिस्तान की मुसीबत के ज़िम्मेदार हैं, अगर अमरीका अफ़ग़ानिस्तान से निकल जाता है तो इलाक़े में अम्न क़ायम हो सकता है। अहमदी नेजाद ने कहा कि दुनिया की क़ौमों ने अमरीका के किरदार को अच्छी तरह पहचान लिया है। उन्होंने कहा कि अमरीका की सरगर्मियाँ अब ईरान के लिए कोई अहमियत नहीं रखतीं क्योंकि ईरान की मिल्लत ने इज़्ज़त और सरबलन्दी की तमाम चोटियों को सर करने का मज़बूत इरादा किया है।

फिलिस्तीनी क़ैदियों को

जिलावतनी की शर्त के साथ रिहाई मन्ज़ूर नहीं

इस्राईली जेल इन्तिज़ामिया की बीमार फिलिस्तीनी क़ैदियों के हवाले से नई ज़ालिमाना पॉलीसी

इस्राईली जेल इन्तिज़ामिया ने बीमार फिलिस्तीनी क़ैदियों के हवाले से एक नई ज़ालिमाना पॉलीसी बनाई है जिसके तहत उन्हें रिहाई पर फिलिस्तीन से बाहर जिलावतनी की पेशकश की जा रही है इस पेशकश से फ़ायदा न उठाने वाले, बीमार क़ैदियों पर इलाज व मुआलेजे के दरवाज़े हमेशा के लिए बन्द कर दिये जाएंगे इस बात का इन्केशाफ़ इण्टरनेश्नल ह्यूमन राइट्स सॉलीडेटरी फ़ाउण्डेशन ने एक अख़बारी बयान में किया। मरकज़े इत्तेलाआत फिलिस्तीन की रिपोर्ट के मुताबिक़ फाउण्डेशन के वकील के हवाले से बताया गया है कि मग़रिबी किनारे के शहर नाब्लस से ताल्लुक़ रखने वाले क़ैदी ज़ुहैर लबादा ने दो साल की जिलावतनी के बदले सहयूनी जेल इन्तिज़ामिया की रिहाई की पेशकश ठुकरा दी है। रिपोर्ट के मुताबिक़ ज़ुहैर लबादा को अपने ख़राब गुर्दे की फ़ौरी तौर पर सर्जरी की ज़रूरत है।

नीज़ उन्हें ख़तरनाक आसाबी मर्ज़ भी लाहिक़ है इसके अलावा उन्हें जिगर का कैंसर और जिस्म के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में शदीद दर्द की शिकायत लाहिक़ है फ़ाउण्डेशन के वकील से बात करते हुए क़ैदी लबादा ने बताया कि मैंने अर-रमला जेल हस्पताल को गुर्दे की सर्जरी के बारे में कई बार दरख़्वास्त की। एक पेशी के मौक़े पर फौजी वकील ने जेल से रिहाई के बदले मुझे उर्दुन जिलावतनी की पेशकश की जिसे मैंने क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया। जिलावतनी फिलिस्तीन से बेदख़ली का दूसरा नाम है। याद रहे कि क़ैदी ज़ुहैर लबादा की अहलिया ''उम्मे रशीद'' भी अपने बाहिम्मत शौहर की रिहाई, जिलावतनी की शर्त के साथ क़ुबूल करने से इन्कार कर चुकी हैं उम्मे रशीद समझती हैं कि जिलावतनी क़ुबूल करने का मतलब ख़ुद अपने वतन फिलिस्तीन वापसी का दरवाज़ा बन्द करना है इस्राईल ने आज तक फिलिस्तीन से जिलावतन किए जाने वालों को वापस आने की इजाज़त नहीं दी। चर्च ऑफ़ नेटवटी के जिलावतनों की मिसाल हमारे सामने है क़ैदी ज़ुहैर लबादा ने अपनी फ़ौरी रिहाई का मुतालबा करते हुए कहा है कि इनके ख़िलाफ़ कोई सुबूत नहीं, उन्हें 15 मई 2008 से अब तक इन्तिज़ामी नज़रबन्दी में रखा जा रहा है।

उन्होंने कहा कि वह जिलावतनी की शर्त के साथ रिहाई के बजाए अपनी ख़राब सेहत के साथ जेल में रहने को तरजीह देंगे बक़ौल लबादा अगर उन्होंने शर्त के साथ इस्राईली रिहाई की पेशकश को क़ुबूल कर लिया तो इस तरह फिलिस्तीनी असीरों की जिलावतनी के बदले रिहाई का नया दरवाज़ा खुल जायेगा उन्होंने इस्राईली जेलों में क़ैद अपने दूसरे हम-वतन साथियों से अपील की कि वह इस्राईली पेशकशों को ठुकराएं क्योंकि उनका मक़सद फिलिस्तीनियों को अपनी सरज़मीन से बेदख़ल करना है। याद रहे कि लबादा को अब्बास मलेशिया ने इग़्वा किया उन्हें नाबलस की अल-जुनैद जेल में बदतरीन तशद्दुद का निशाना बनाया गया। उन्हें अब्बास मलेशिया के अहलकारों ने उनकी सेहत की ख़राबी के बारे में जानते हुए उन्हें इग़्वा किया। अपनी क़ैद के बाद क़ैदी लबादा का ज़्यादातर वक़्त जेल के शिफ़ाख़ानों में अपने गुर्दों की सफ़ाई और दूसरे मर्ज़ों का इलाज कराते गुज़रा है।

शरफ़ लखनवी की रेहलत

अफ़सोस सद अफ़सोस कि आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा सय्यद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह से क़ुरबत व अक़ीदत रखने वाले मशहूर शायर जनाब शरफ़ लखनवी इब्ने जनाब तकमील लखनवी ने 28 अप्रैल 2010ई० को इस दारेफ़ानी से दारे बक़ा की जानिब रेहलत फ़रमाई। आपकी तदफ़ीन सैकड़ों मोमिनीन की मौजूदगी में दारुस्सलामे हिन्द इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब लखनऊ में हुई। और 3 मई 2010ई० को आपकी मजलिसे पन्जुम शहज़ादा क़ासिम हाल, फ़ातिमैन लखनऊ में मुनअक़िद हुई जिसे मौलाना सै० तक़ी रज़ा आब्दी साहब ने ख़िताब फ़रमाया। इसके अलावा शहर की कई अदबी और मज़हबी तनज़ीमों की जानिब से ताज़ियती जल्से हुए जिनमें मरहूम की इल्मी और अदबी ख़िदमात का भरपूर एतेराफ़ किया गया।

शरफ़ रिज़्वी साहब के वालिद जनाब तकमील लखनवी साहब भी क़ुहनामश्क़ शायर थे। शरफ़ साहब ख़ुद एक अच्छे शायर होने के साथ-साथ एक बाअख़लाक़ मुनकसिरुल मिज़ाज, हमदर्द और ख़ुशफ़िक्र इन्सान थे। इदारा शरफ़ साहब के इन्तेक़ाल पर उनके अहले ख़ानदान को ताज़ियत पेश करता है और दुआ करता है कि अल्लाह तआला मरहूम को बतुफ़ैले मुहम्मदस० व आले मुहम्मदअ० जेवारे मासूमीन में जगह इनायत फ़रमाए।